सहेजता है, और पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ा देता है। बरगद का तना मानो एक ग्रंथ है, जिसकी छाल पर समय की लिखावट उकेरी हुई है। उसकी छाँव में बैठकर हम सीखते हैं कि स्थायित्व किसे कहते हैं। आंधियाँ आएँ, ऋतुएँ बदलें, पर यदि जड़ें गहरी हों, तो कोई तूफ़ान हमें गिरा नहीं सकता। बरगद हमें यही शिक्षा देता है—कि संस्कृति, परंपरा और स्मृतियाँ ही जीवन की जड़ें हैं, और इन्हीं में स्थायित्व का आधार छिपा है।

गाँव के लोकगीतों में बरगद का नाम अक्सर पिता की छाया, गुरु की गंभीरता और समय की दीर्घायु के रूप में आता है। बरगद की छाँव में बैठा हर व्यक्ति जब उठता है, तो अपने भीतर कुछ और अधिक शांति, थोड़ी और परिपक्वता, और बहुत-सा अपनापन लेकर लौटता है। बरगद की छाँव में जीवन का दर्शन है—सहारा, स्थायित्व, सामूहिकता और स्मृति वह हमें पुकारती है—

“आओ, मेरे नीचे ठहरो। यहाँ तुम्हारे बचपन की हँसी है, माँ की लोरी है, दादी की कहानी है, किसान की थकान है, और भविष्य की आशा भी है।”

बरगद तुम इसी प्रकार से इस प्रकृति में छाया, शांति और स्थितप्रज्ञता का प्रसार करते रहो, ताकि ये जगत तुम्हारे गुणों को अपनाकर उपकार का मार्ग परस्त करता रहे। ये संसार यह सीखता रहे कि समानता, दया, करुणा, सौहार्द्ध आदि गुणों को कैसे आगे बढ़ाया जाता है- अविरल..... निर्निमेष....।

डॉ. नन्द किशोर महावर
कोटा (राज.)
- 9413651856

आलेख - गांव ही हमारे जीवन का आधार है

हम भले ही चाहें अपनी नौकरी या व्यवसाय के लिए दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएं मगर हमारा गांव हमें सदा याद आता है गांव से हमारी जिंदगी को गति मिलती है गांव की मिट्टी से हमारा गहरा नाता होता है और गांव की मिट्टी से ही हमारा भविष्य महकता है हमारे गांव के बचपन के पुराने मित्रों से जब कभी मिलते हैं उन से पुरानी बातें करते तो हमारी पुरानी यादें ताजा हो जाती है और दिल में बहुत खुशी होती है वो स्कूल टाइम की किस्से जब हमें याद करते हैं तो हमें फिर से बचपन में लोट जाते हैं आज भी हमारी गांव की मिट्टी से हमें बहुत प्रेम और लगाव रहता है हमारे गांव परिवार के बुजुर्गो का चेहरा याद आता है उनकी हर बात और संस्कार याद आते हैं हमें उनके दिए गए सभ्यता और संस्कारों पर चलना चाहिए हमारे बच्चों का तो जन्म तो शहर मैं हुआ है उनको गांव की हर बातें पुरानी यादें बुजुर्गो की हर प्रेरणादायक बातें और हमारे गांव की सभ्यता संस्कृति से जरूर अवगत करना चाहिए हमारे गांव में कैसे त्योहारों को मनाया जाता है हमारे गांव की परंपरा और रीति-रिवाज के बारे में जरूर बताना चाहिए ताकि हमारे गांव की मिट्टी से यह युवा पीढ़ी भी जुड़ी रहें और हमारे बच्चों के मन में हमारे गांव और बुजुर्गो के प्रति प्रेम भाव बना रहे गांव में आज भी हर त्योहार को परंपरागत तरीके से मनाते हैं जब हम अपनी जिंदगी की भागदौड़ से कुछ पल छांट कर हम अपने गांव जाते हैं मन में बहुत खुशी होती है फिर पुरानी यादें ताजा हो जाती है गांव के प्रति हमारा प्रेम भाव बढ़ता है पुराने पीपल का पेड़ आम का बगीचा बहती हुई नदी का किनारा वो गांव की गलियों में आज भी हमारा बचपन नजर आता है।

सुनील गौर (इंदौर ,मध्यप्रदेश)